lf{kIr ifjp;

श्रीमद् भगवद्गीता में भगवान ने कहा है कि ^tc&tc fo'o esa /kesZ dh Xykuh gksrh gS rks n"Vks dks n.M nsus rFkk lTtuks dh j{kk djus ds fy, eSa lf"V ij vkrk gw¡A*

तो सोचिए, क्या दुनियाँ की परिस्थिति इतनी नहीं बिगड़ी है कि भगवान को इस धरती पर आने की आव यकता हो? दुनियाँ में चारों ओर आग ही आग दहक रही है। कहीं काम की अग्नि, तो कहीं क्रोध की अग्नि; कहीं मनुश्य प्रकृति का ना ा करता आया है और कहीं प्रकृति मनुश्य का ना ा कर रही है। क्या सृश्टि का इसी प्रकार पतन होता रहेगा? क्या इसका परिवर्तन सम्भव है?

हाँ, सम्भव है ; किन्तु पतित मनुश्यों द्वारा नहीं अपितु पतित–पावन, सदा कल्याणकारी परमपिता परमात्मा ि ाव भगवान द्वारा, जो कि नर्क को स्वर्ग बनाने के लिए भारत भूमि पर दिव्य जन्म ले चुके हैं और सन् 1936–37 से इस वि व परिवर्तन का कार्य एक साधारण मनुश्य तन में प्रवे ा कर गुप्त रूप से lgt jkt;kx और bZ'ojh; Kku की ि ाक्षा द्वारा कर रहे हैं। जैसा कि गीता में वर्णित है कि ^^e<+erh yksx lk/kkj.k ru esa vk, eq> ijekRek dks ugha igpku ikrsA** पहचाने भी कैसे? क्योंकि 5000 वर्श के इस वि ााल सृि ट–रूपी नाटक में 84 जन्म लेते–2 सभी मनुश्य आत्माएं पतित एवं विकारी बन चुकी हैं; मिट्टी के समान भारीर में मन–बुद्धि को लगाते–2 पत्थर बुद्धि बन गई हैं, मूर्छित हो गई हैं। गीता में वर्णित है कि ^^vius fo'o :Ik dk n'kZu djkus ds fy, Jh d".k us vtqZu dks fnO; p{kq iznku fd,A** यह सिर्फ एक अर्जुन की बात नहीं है, न ही कृश्ण ने किसी रथ पर बैठकर अर्जुन को संस्कृत में गीता के 18 अध्याय सुनाए थे। वास्तव में वो निराकार ज्योतिर्बिंदु ि ाव जो सर्व आत्माओं का पिता है, वो वर्तमान समय में किसी मनुश्य भारीर रूपी रथ में बैठकर सभी पुरुशार्थ का अर्जन करने वाले अर्जुन रूपी आत्माओं को सृश्टि के आदि, मध्य और अंत का रहस्य समझा रहे हैं, bZ'ojh; Kku व jkt;kx की ि ाक्षा दे रहे हैं। उसके ज्ञान व अविना ाी सुख– ाान्ति के वर्से पर हम सबका हक है। यह वर्सा हमें देने के लिए स्वयं भगवान इस धरती पर पधार चुके हैं।

परमात्मा का यह कार्य सन् 1936–37 में पाकिस्तान के fla/k&gSnjkckn भाहर से प्रारम्भ हुआ, जब सुप्रीम सोल ि ाव ने nknk ys[kjkt नामक एक विख्यात हीरों के व्यापारी को विश्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार कराया; किन्तु वे उन दिव्य साक्षात्कारों का अर्थ समझ न पाए। उन्होंने अपने गुरूओं से इसका अर्थ पूछा; किन्तु भगवान की लीला वे देहधारी गुरू लोग क्या समझें? फिर वे (दादा लेखराज) okjk.klh के प्रकाण्ड पण्डितों से इसका समाधान पाने के लिए गये; किंतु उन्हें वहाँ भी निरा ाा ही हाथ लगी। वहाँ भी उन्हें साक्षात्कार होते रहे जिसकी तस्वीरें वे गंगा के घाटों पर बनी दीवारों पर बनाते रहते थे। जब कोई भी उनकी समस्या का समाधान न कर सका तो उन्हें dydRrk esa jgus okys अपने Hkkxhnkj (lsodjke) की याद आई। उस भागीदार की निश्ठा व ईमानदारी से प्रभावित होकर ही उन्होंने अपने कलकत्ता स्थित हीरों की दुकान की जिम्मेवारी उन्हें सौंपी थी।

अतः दादा लेखराज कलकत्ता गए; किंतु सीधे उस भागीदार को अपने साक्षात्कारों का वर्णन करने की बजाय उन्होंने उनकी पत्नी को सुनाया और पत्नी ने

एक अन्य माता को सुनाया जो बोलने, सुनने, सुनाने में सिद्धहस्त थी। बाद में जब सुनने–सुनाने में सिद्धहस्त माता ने प्रजापिता(भागीदार) को सुनाया उसी समय ज्योतिबिंदु परमपिता परमात्मा ि ाव ने दोनों माताओं और प्रजापिता में साथ ही साथ प्रवे ा कर सिद्धहस्त माता द्वारा सुनने–सुनाने का भक्तिमार्ग का फाउंडे ान डाला और भागीदार के द्वारा समझने–समझाने का ज्ञानमार्ग का बीजारोपण करने का फाउंडे ान डाला। कुछ समय के बाद दादा लेखराज ने भागीदार और उनकी पत्नी के प्रैक्टिकल पार्ट और अनुभव से अपने वर्तमान जन्म के पार्ट 'ब्रह्मा' के स्वरूप को पहचान लिया और भविश्य सतयुग में कृश्ण के रूप में प्रथम महाराजकुमार के स्वरूप को भी पहचान लिया। इसी तरह ओमराधे नाम की कन्या ने अपने वर्तमान जन्म के 'सरस्वती' नामक पार्ट का और भविश्य सतयुग में राधा के रूप में प्रथम महाराजकुमारी के स्वरूप का भी नि चय कर लिया। वास्तव में तो ये दोनों ब्रह्मा और सरस्वती टाइटिलधारी ब्रह्मा–सरस्वती ही थे। जबकि मूल रूप में भागीदार ही प्रजापिता ब्रह्मा और दूसरी माता जगदम्बा (बड़ी माँ) का स्वरूप था।

भगवान द्वारा साकार रूप में स्थापित यह परिवार पुनः सिंध–हैदराबाद और बाद में djkph स्थानान्तरित हुआ, जहाँ कुछ वर्श तक निराकार ि ाव का साकार माध्यम बनने के बाद भागीदार तथा उन दोनों माताओं का देहावसान हो गया। तो यह ई वरीय कार्य की सारी जिम्मेवारी दादा लेखराज के कंधों पर आ पड़ी, जिन्होंने भगवान का परिचय पाते ही अपना तन, मन और धन इस ई वरीय कार्य पर न्यौछावर कर दिया था। अतः परमात्मा ने वि व परिवर्तन का यह कार्य दादा लेखराज के भारीर के द्वारा ही जारी रखा।

इस बीच यह ई वरीय परिवार जो पहले ^vke eMyh* कहलाता था, दे ा के विभाजन के प चात् jktLFkku स्थित ekmaV vkcw में स्थानान्तरित होने पर ^itkfirk czgekdqekjh b'ojh; fo'o fo|ky;* कहलाने लगा। यहाँ से ई वर द्वारा सिखलाए गए ज्ञान व राजयोग की ि ाक्षा का दे ा–विदे ा में प्रचार होने लगा। दादा लेखराज (उर्फ ब्रह्मा) के द्वारा परमात्मा ि ाव ने आत्मा, परमात्मा एवं सृश्टि के आदि, मध्य व अन्त का प्रारम्भिक या बेसिक ज्ञान दिया । सर्वप्रथम यह ज्ञान दिया कि हम पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाभा– इन पाँच तत्वों से निर्मित यह भारीर नहीं; किन्तु वास्तव में हम अति सूक्ष्म ज्योतिर्बिंदु आत्मा हैं। जिस प्रकार गाड़ी को चलाने के लिए ड्राइवर की आव यकता होती है, उसी प्रकार इस भारीर–रूपी गाड़ी को चलाने के लिए आत्मा–रूपी ड्राइवर की आव यकता होती है। आत्मा में मन, बुद्धि व संस्कार होते हैं। आत्मा अजर, अमर, अविना ाी है ; किंतु भारीर विना ाी है। जैसे आम का बीज बोने से आम ही निकलता है, ठीक ऐसे ही मनुश्यात्मा मनुश्य के रूप में ही पुनर्जन्म लेती है; किंतु दूसरी योनियों में नहीं जाती।

जिस प्रकार हम एक सितारे की भांति आत्मा हैं, उसी प्रकार हमारे अविना ाी पिता सुप्रीम सोल ि ाव भी एक स्टार स्वरुप आत्मा हैं; किंतु वे परम आत्मा हैं अर्थात् हर गुण व भाक्ति में अनंत हैं। हम आत्माएं कभी पतित तो कभी पावन बनती हैं; किंतु वह सदा पावन है, इसलिए उनका असली नाम है ^f'ko^। 'ि ाव' अर्थात् कल्याणकारी। सदा कल्याणकारी होने के कारण उन्हें ^lnkf'ko* भी कहते हैं।

परमात्मा सर्वव्यापी नहीं हैं , न तो वे माँ के गर्भ से जन्म लेते हैं, न विभिन्न जन्तुओं के रूप में अवतार लेते हैं। वे तो तीन अति श्रेश्ठ मनुश्य आत्माओं के भारीरों में प्रवे ा कर LFkkiuk] fouk'k vkj ikyuk के तीन कर्तव्य करते हैं। इसलिए

उन्हें ^f=efr! f'ko* भी कहते हैं। भाास्त्रों में f'ko&'kdj को इकट्ठा कर दिया है; किंतु निराकार ि ाव अलग है और साकार भांकर महादेव अलग है।

परमात्मा ि ाव एवं हम आत्माएं सूर्य, चंद्र व नक्षत्रों के इस अंतरिक्ष से पार परमधाम के रहवासी हैं, जहाँ से हम आत्माएं इस सृश्टि रूपी रंगमंच पर यह भारीर रूपी वस्त्र धारण कर नाटक करती हैं। यह सृ ि ट–रूपी नाटक 5000 वर्श का होता है जिसमें मनुश्य आत्माएं ज्यादा से ज्यादा 84 जन्म लेती हैं। इस नाटक में चार युगों के चार सीन्स होते हैं जिनमें से प्रत्येक युग की आयु 1250 वर्श होती है। जिनमें सतयुग और त्रेता को ^Lox!* तथा द्वापर और कलियुग को ^ud!* कहा जाता है। स्वर्ग, जो आज से 5000 वर्श पूर्व स्थापन हुआ था, उसमें सभी मनुश्य आत्माएं देवी–देवता थे; क्योंकि वहाँ हम आत्मा अभिमानी होने के कारण सर्वगुण सम्पन्न व पवित्र थे। वहाँ एक राज्य, एक भाशा, एक आदि सनातन देवी–देवता धर्म ही होता था। चूंकि हम पवित्र व सुखी होते हैं तो भगवान को याद करने की आव यकता नहीं होती थी ; किंतु जब द्वापरयुग से हम स्वयं को देह समझने लगते हैं तो दुःख–अ ाान्ति की भाुरुआत होती है और देवी–देवताएं जो अब 'हिन्दू' कहलाते हैं, वे ही मंदिर बनाकर ि ावलिंग व देवी–देवताओं की पूजा करने लगते हैं। विभिन्न धर्मपिताओं की आत्माएं परमधाम से आकर अपना–2 धर्म स्थापन करती हैं।

द्वापरयुग में bcjkghe द्वारा bLyke /keZ की स्थापना व Økb'V द्वारा fØf'p;u /keZ की स्थापना होती है। कलियुग में अनेकानेक धर्म व मत–मतांतर स्थापित हो जाते हैं। मनुश्य बिल्कुल पतित, भ्रश्टाचारी एवं तमोप्रधान बन जाते हैं। तब कलियुग अन्त में स्वयं परमात्मा ि ाव पतित आत्माओं को पावन बनाने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के तन में परकाया प्रवे ा कर ई वरीय ज्ञान व राजयोग सिखाते हैं। 1936–37 से प्रारम्भ हुए ि ाव अवतरण के इस समय को ^laxe;qx* कहा जाता है अर्थात् कलियुग के अंत एवं सतयुग के आदि का संगम। यहाँ मनुश्यात्माएं परमात्मा की याद से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकारादि पाँच विकारों को भस्म कर फिर से सर्व ाक्ति सम्पन्न बनती हैं।

माउन्ट आबू में परमात्मा का यह कार्य चल ही रहा था; किंतु 18 जनवरी 1969 में अचानक दादा लेखराज (उर्फ ब्रह्मा) का देहावसान हो गया (जिनकी आत्मा अभी तक ब्रह्माकुमारी संस्था की गुल्जार दादी के तन में प्रवे ा कर अव्यक्त वाणी सुनाती है) ; किंतु भगवान का यह वि व परिवर्तन का बेहद का कार्य तो रुक नहीं सकता। अतः परमात्मा ने सन् 69 में ही उसी भागीदार के अगले जन्म वाले मुकर्रर भारीर रूपी रथ में प्रवे ा किया जिसकी प्रत्यक्षता सन् 1976 से fnYyh के ब्रह्माकुमारी विद्यालय के जिज्ञासुओं के बीच हुई। बाद में (सन् 1982 से) वही ई वरीय कार्य उत्तर प्रदेश के Q:[kkckn जिले के dfEiyk गाँव से पहले गुप्त रूप से और अभी प्रत्यक्ष रूप से कलंकीधर रूप से चल रहा है।

जीर्ण– ाीर्ण अति प्राचीन कम्पिला ग्राम जो आज मानवता के मस्तिश्क पटल से धूमिल हो चुका है। यह वास्तव में ऐतिहासिक व पौराणिक दृश्टि से बहुत महत्वपूर्ण ग्राम है। महाभारत काल में कम्पिला पांचाल दे ा की राजधानी थी। कम्पिला में ही पांचाल नरे ा द्रुपद की पुत्री 'द्रौपदी' का जन्म हुआ माना जाता है। जिस ज्ञान यज्ञ कुण्ड से द्रौपदी का जन्म हुआ था उसकी यादगार आज भी यहाँ स्थित है। यज्ञ कुण्ड के समीप ही टीले पर एक आश्रम है जो कपिल मुनि की तपस्या स्थली है। कम्पिला में ही जैनियों के दो प्रसिद्ध तीर्थ स्थल अर्थात् तेरहवें

तीर्थंकर श्री विमलनाथस्वामी का दिगम्बर जैन मंदिर तथा श्वेताम्बर जैन मंदिर भी स्थित है। इनके अलावा कई पुराने मंदिर भी हैं जो उसके ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व को सिद्ध करते हैं। भाायद इसलिए भगवान ने भी वि व परिवर्तन के अपने गुप्त कार्य के लिए इस कम्पिला गाँव को ही चुना है।

माउन्ट आबू में परमपिता ि ाव ने दादा लेखराज ब्रह्मा द्वारा सन् 1951 से 18 जनवरी 1969 तक जो ज्ञान मुरलियाँ चलाई थीं, उन्हीं के गुह्यार्थ का स्पश्टीकरण सन् 1976 से कम्पिला से प्रत्यक्ष हुए निराकार ि ाव के अंतिम मनुश्य भारीर–रूपी मुकर्रर रथ प्रजापिता ब्रह्मा (जिनका कर्तव्यवाचक नाम ' ंकर' है) के द्वारा अब दिया जा रहा है। परमात्मा ने दादा लेखराज ब्रह्मा द्वारा जो चार चित्र तैयार किए (जिनमें सृश्टि के आदि, मध्य और अंत का सार समाया हुआ है) उनका स्पश्टीकरण भी अब इस मुकर्रर रथ के द्वारा दिया जा रहा है।

उदाहरण के तौर पर त्रिमूर्ति ि ाव के चित्र में ब्रह्मा, विश्णु और भांकर के साथ ज्योतिर्बिन्दु ि ाव को भी चित्रित किया गया है। हालांकि इस चित्र में विश्णु एवं भांकर तो वैसे ही हैं जैसा कि हिंदुओं के पौराणिक भाास्त्रों में वर्णित है; किंतु ब्रह्मा के स्थान पर दादा लेखराज का चित्र लगाया गया है। इस विशय में ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा यह स्पश्टीकरण दिया जाता है कि परमात्मा ि ाव ने दादा लेखराज के द्वारा नई दुनियाँ की स्थापना का कार्य प्रारम्भ किया था, इसलिए ब्रह्मा के स्थान पर उन्हें दिखाया गया है ; किंतु दादा लेखराज की भांति साकार भारीर से इस पुरानी आसुरी सृश्टि का विना ा तथा आने वाली दैवी दुनियाँ की पालना का कार्य किन मनुश्य आत्माओं के द्वारा करायेंगे? इस बात की जानकारी उनको नहीं है; लेकिन निराकार ि ाव के मुकर्रर रथ द्वारा यह बात स्पश्ट हो चुकी है कि वे किन मनुश्य आत्माओं द्वारा स्थापना, विना ा व पालना का कार्य करा रहे हैं अर्थात् ब्रह्मा, भांकर व विश्णु की भूमिका कौन अदा कर रहे हैं; सारे वि व के माता–पिता कौन हैं जिनके द्वारा परमपिता ि ाव सारी दुनियाँ को अविना ी सुख– ान्ति का वर्सा देते हैं और जो fo'o egkjktu Jh ukjk;.k o fo'o egkjkuh Jh y{eh के रूप में इस सृश्टि पर राज्य करेंगे; आने वाली नई दुनियाँ (पैराडाइज या जन्नत) कैसी होगी व उस स्वर्गीय दुनियाँ के पहले पत्ते अर्थात् श्री कृश्ण व श्री राधे कौन बनेंगे?

इस प्रकार सन् 1976 से प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा दिये जा रहे ,Mokal Kku में हमें यह भी बताया गया है कि किस प्रकार 5000 वर्श के इस सृश्टि रूपी नाटक की भाूटिंग या रिहर्सल इस संगमयुग में होती है, इस मनुश्य सृश्टि के बीज कौन हैं, संगमयुग में कैसे सभी धर्मो की बीजरूप व आधारमूर्त आत्माएं उस ज्ञान सागर से असली ज्ञान लेती हैं तथा द्वापरयुग से अपना–2 धर्म स्थापन करते हैं; मनुश्य आत्माएं अधिक से अधिक 84 जन्म कैसे लेती हैं तथा इन जन्मों में उनके उत्थान व पतन की नींव संगमयुग में कैसे रखी जाती है। इस ज्ञान से भी ऊँचे राजयोग अर्थात् राजाओं का राजा बनाने की ि ाक्षा, ाक्ति व मार्गद ान भी स्वयं परमात्मा अब सम्मुख दे रहे हैं।

भगवान का इस धरती पर आने का मुख्य लक्ष्य ही यह है कि वि व धर्मों की सभी आत्माओं को एक सूत्र में बांधकर प्रायःलोप हुए आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करना अर्थात् मनुश्य से देवता बनाना। uj ,ls deZ djs tks uj vTkku ls ukjk;.k cus vkSj ukjh ,sls deZ djs tks ukjh ls y{eh cus। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दो साधन हैं– bZ'ojh; Kku vkSj lgt jkt;ksx।

इस ज्ञान का एडवांस निः ुल्क प्रि क्षण आध्यात्मिक ई वरीय वि व विद्यालय के कम्पिला स्थित मुख्यालय (मिनी मधुबन) द्वारा दिया जाता है तथा भारतवर्श में फैली इसकी विभिन्न अन्तर्राज्यीय ाााखाओं तथा गीता पाठ ाालाओं द्वारा भी दिया जाता है।

विज्ञान के आविर्भाव के साथ ही मनुश्य द्वारा कई द ाकों से अधिक धन कमाने की लालसा में रासायनिक खादों का अंधाधुंध प्रयोग किया जा रहा है। इन कृत्रिम खादों से उत्पादन तो बढ़ा ; किंतु प्रकृति का, धरती का प्रदूशण दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया और इस प्रदूशित अन्न के सेवन से आज सारी मानवता मानसिक व ाारीरिक दोनों रूप से रूग्ण हो गई है। अतः इन खेतों में रासायनिक खाद रहित तथा ई वरीय स्मृति में की गयी कृशि का यह भगवान ि ाव द्वारा सृश्टि परिवर्तन की इस प्रक्रिया के एक भाग के रूप में 1990 के दशक के अंतिम चरण में आध्यात्मिक ई वरीय वि व विद्यालय के सदस्यों द्वारा पंजाब–हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के कम्पिल ग्राम में अनूठा प्रयोग आरम्भ किया गया। tSlk vUUk oSlk eu के सिद्धांत को कार्यरूप देने हेतु प्रदूशणमुक्त फसल उगाने तथा वि व में पवित्र तरंगों के प्रसार के उद्दे य से इस ई वरीय वि वविद्यालय द्वारा अपने मुख्यालय तथा विभिन्न ाााखाओं में ई वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग का अभ्यास कराने के लिए उक्त स्थानों पर रासायनिक खाद रहित फसल की पैदावार प्रारम्भ की गई। जिससे उत्पन्न खाद्यान्नों के सेवन से तन, मन दोनों के स्वास्थ्य को सुनिि चत किया जा सके।

इस प्रकार इस विद्यालय में आत्मा और प्रकृति दोनों को पवित्र बनाने का कार्य चल रहा था। एक अनूठे प्रयोग के रूप में यहाँ पर विद्यालय के सदस्य ही ई वर की याद में कृशि सेवा करते थे। प्राचीन कालीन आश्रम जीवन की याद को ताजा करते हुए कर्मयोग का अभ्यास करते हुए तपस्या करते थे। यहाँ के रहवासी ब्रह्म मुहूर्त से अपने दिन का आरम्भ करते हुए ई वरीय ज्ञान के श्रवण तथा राजयोग के अभ्यास के प चात् ई वर की याद में कृशि से जुड़े विभिन्न कार्य करते थे।

पंजाब–हरियाणा स्थित उक्त आध्यात्मिक कृषि फार्म में उक्त आध्यात्मिक पद्धति से प्रकृति को पावन बनाने का कार्य लगभग आठ साल तक सुचारू रूप से चल रहा था और कई दशकों से रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से जो भूमि बंजर हो चुकी थी, उसे आ.ई.वि.वि के सद्स्यों ने अपनी कड़ी मेहनत और प्रेम से जैविक खादों का प्रयोग करते हुए उपजाऊ बना दिया था ; किन्तु जिस जी.एफ.आई.एल कम्पनी से आ.ई.वि.वि के सदस्यों ने सामूहिक रूप से यह कृषि भूमि खरीदी थी, उस कम्पनी के दिवालिया होने के पश्चात विभिन्न न्यायालयों में चल रहे मुकदमों के चलते सरकार ने आ.ई.वि.वि के सदस्यों की भूमि को अपने कब्जे में ले लिया है। जिससे आध्यात्मिक कृषि द्वारा आत्मा, शरीर एवं प्रकृति को पवित्र बनाने के पुनीत कार्य में बाधा उत्पन्न हो गई है। चूंकि इस सम्बन्ध में मुकदमा माननीय उच्चतम न्यायालय में विचाराधीन है इसलिए सरकार ने उक्त भूमि पर कृषि कार्य को रूकवा दिया है जिससे विश्व कल्याण के लिए काम कर रहे आ.इ.वि.वि में रहने तथा आने–जाने वाले सदस्यों के आहार का एक प्रमुख स्रोत बंद हो चुका है। आठ वर्षों के कठिन परिश्रम से प्राप्त किये गये जैविक खेती के परिणामों पर पानी फेरा जा रहा है। जो सरकार एक तरफ जैविक खेती को प्रोत्साहित करती है, वही सरकार दूसरी ओर जैविक खेती की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न कर रही है। आशा है कि सरकार न्यायालय में मामले के निपटारे तक

पूर्व की भांति आ.ई.वि.वि के सदस्यों को जैविक खेती करके अपने भोजन की व्यवस्था करने की अनुमति प्रदान करेगी जिससे जन–जन का कल्याण हो सके।

अतः आप भी जीवन में सच्ची सुख– ान्ति व पवित्रता की अनुभूति के लिए तथा भारत दे ा में चल रहे निराकार परमपिता ि ाव परमात्मा के गुप्त कार्य की अधिक जानकारी के लिए हमारे स्थानीय आश्रम में पधारें।

m vke ‘kkfUr m

ejyh lokbV l

m मैं तो खुद मालिक हूँ। फर्रूखाबाद में मालिक को मानते हैं ना। तुमने मालिक का अर्थ भी समझा है। वह है मालिक। हम उनके बच्चे हैं। तो जरूर वर्सा मिलना चाहिए।

-मु.ता. 20.11.88, पृ.2 मध्य

m बाप आते भी हैं मगध दे ा में, जो कि बहुत गिरा हुआ दे ा है। बहुत पतित है, खान–पान भी गंदा है। -मु.ता. 4.9.99,पृ.3

m भांकर द्वारा विना ा होना है। वह भी अपना कर्तव्य कर रहे हैं। जरूर भांकर भी है तब तो सा. होता है।

-मु.ता. 26.2.73 पृ. 1 अंत